रिकार्ड–नयनहीन को राह..... ओमशांति प्रातःक्लास 21–5–67
यह सब गीत आदि हैं भक्तिमार्ग के। तुम्हारे लिए कोई गीतों की दरकार नहीं है। कोई तकलीफ की बात नहीं। भक्तिमार्ग में तो तकलीफें बहुत हैं ना। कितने रस्म–रिवाज चलते हैं। ब्राह्मण खिलाना यह करना,तीर्थों आदि पर जाना बहुत कुछ करना होता है। यहां बाप आकर सब तकलीफों से छुड़वा देते हैं। इसमें कुछ भी करना नहीं है। मुख से शिव2 बोलना भी नहीं है। यह भी कायदा नहीं है। इससे कोई फल नहीं मिलेगा। बाप कहते हैं कि यह अंदर में समझना है कि मैं आत्मा हूँ। बाप ने कहा है कि हमको याद करो। अंतर्मुख होकर बाप को ही याद करना है। तो बाप प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। यह है योगाग्नि जिससे तुम्हारे सारे पाप दग्ध हो जावेंगे। फिर तुम वापस चले जावेंगे। हिस्ट्री रिपीट होनी है। यह सब अपने साथ बातें करने की युक्तियां हैं। अपने ही साथ रुह–रिहान करते रहो। बाप कहते हैं कि मैं कल्प2 तुमको यह युक्ति बताता हूँ। यह भी जानते हो कि धीरे2 यह झाड़ वृद्धि को पावेगा। माया का तूफान भी इसी समय है जबकि मैं आकर तुमको माया के इन बंधनों से छुड़वाता हूँ। सतयुग में कोई बंधन होता नहीं है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी अभी अर्थ सहित तुम्हारी सहित बुद्धि में है। यहां पर हर बात अर्थ सहित ही है। बाकी सब है अनर्थ। देहअभिमानी बात जो करेगा वो अनर्थ। देहीअभिमानी अर्थ सहित बात करेंगे। उससे फल मिलेगा। अब भक्ति मार्ग में कितनी डिफिकल्टी होती है। समझते हैं कि तीर्थ यात्रा करना, यह सब करना यह सब भगवान तक पहुंचने के रास्ते हैं;परंतु बच्चों ने अब समझा है कि वापस कोई एक भी नहीं जा सकते। पहले नम्बर में जो विश्व के मालिक थे उनका ही 84जन्म बता दिये हैं तो बाकी दूसरे फिर छूट ही कैसे सकते हैं?सब चक्र में आते हैं तो फिर कृष्ण के लिए कैसे कहेंगे कि वो सदैव कायम है ही है। हां, कृष्ण का नाम–रूप तो चला गया। बाकी आत्मा तो है ही है किसी ना किसी रूप में। यह सब बातें बच्चों को बाप ने आकर समझाईं हैं। यह पढ़ाई है। स्टुडेंट लाइफ पर पूरा ध्यान देना है। रोजाना समय फिक्स करना है अपना चार्ट लिखने का। व्यापारी लोगों को बहुत बंधन रहता है। नौकरी करने वालों पर बंधन नहीं रहता। उन्होंने तो अपना काम पूरा किया तो खलास। व्यापारी लोगों के पास तो कब भी ग्राहक आवे तो सप्लाई करना पड़े। बुद्धियोग बाहर जाता है। तो बच्चों को कोशिश (कर) समय निकालना चाहिए। अमृतवेले का समय अच्छा है। उस समय बाहर के विचारों को लॉकप कर देना चाहिए। (ताला लगा देना चाहिए) कोई भी खयाल नहीं आवे। बाप की ही (याद), बाप की महिमा लिख देनी चाहिए। बाबा ज्ञान का सागर है। पतित–पावन है। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। उनकी ही श्रीमत पर चलना है। सभी से अच्छी मत मिलती है मनमनाभव। दूसरा कोई तो ऐसे बोल न सके। कल्प2 यह मत मिलती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की। बाप तो सिर्फ कहते हैं कि मामेकम् याद करो। इसको कहा जाता है वशीकरण मंत्रं अर्थ सहित याद करने से ही खुशी होगी। बाप कहते हैं कि अव्यभिचारी याद चाहिए। जैसे अव्यभिचारी भक्ति है ही एक शिव की पूजा। फिर व्यभिचारी होने कारण अनेकों की भक्ति करते हैं। असल थी अद्वैत भक्ति। एक की भक्ति करना। सो ही ज्ञान भी अब एक का ही सुनना है। जिनको भक्ति में याद करते हैं। वो खुद भी आकर समझाते हैं। मीठे2 बच्चों भक्ति का पार्ट भी चलना ही है। पहले2 एक शिव की ही तुम मंदिर बनाते हो। जब अव्यभिचारी भक्ति होती है तो तुम सुखी होते हो। फिर व्यभिचारी होने से द्वैत में आने पर थोड़ा दुःख भासता है। एक बाप ही तो सबको सुख देने वाला है ना। बाप कहते हैं कि मैं आकर तुम बच्चों को मंत्र देता हूँ। मंत्र भी एक का ही सुनो। यहां देहधारी भी नहीं है। इसमें मूंझो मत। पक्का कर लो। एक शिवबाबा को ही याद करना है। शिव..... को आना भी है जरूर। और कोई शरीर तो ले नहीं सकते। यहां पर तुम आते ही हो बापदादा के .....

शिवबाबा से उंच तो कोई है नहीं। याद भी सभी उनको ही करते हैं। भारत ही स्वर्ग था ना। इन ल.ना. का राज्य था। उनको ऐसा किसने बनाया?जिनकी ही तुम पूजा करते हो। यह किसी को भी पता नहीं है कि महालक्ष्मी कौन है। महालक्ष्मी का अगला जन्म क्या था यह भी कोई नहीं जानते हैं। तुम जानते हो कि जगतअम्बा है तो तुम माताओं को ही जगतअम्बा कहा जाता है। भारत माता कोई एक का ही नाम नहीं है। तुम सब शिव से ही शक्ति लेती हो योगबल से। शक्ति लेने में ही माया इन्टरफेयर करती है। युद्ध में तो उंगली लगती है ना। तो बहादुर होकर लड़ना चाहिए। ऐसे नहीं कि कोई ने उंगली ही लगाई और तुम फिस पड़ो। यहां है ही माया से युद्ध। बाकी कोई कौरवों और पांडवों की युद्ध है नहीं। उनकी तो यवनों से युद्ध है। मनुष्य जब लड़ते हैं तो एक/दो गज जमीन कारण भी गला काट देते हैं। बाप आकर समझाते हैं कि यह सब ड्रामा बना हुआ है। रामराज्य और रावणराज्य। अभी तुम बच्चों को यह ज्ञान है कि हम रामराज्य में जा रहे हैं। वहां पर अथाह सुख है। नाम ही है सुखधाम। यहां पर दुःख का नामोनिशान नहीं होता। अब जबकि बाप आये हैं। बच्चों को ऐसी राजाई देते हैं तो बच्चों को कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। बार2 कहता हूँ कि बच्चों को (थको) नहीं। शिवबाबा को याद करते रहो। वो भी बिंदी है। हम आत्मा भी बिंदी हैं। यहां पर पार्ट बजाने आये हैं। अब पार्ट पूरा होता है। अब बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। विकर्म आत्मा पर ही चढ़ते हैं। शरीर तो यहां ही खतम हो जावेगा। कोई मनुष्य कोई पाप करते हैं तो अपने शरीर को ही खतम कर लेते हैं ;परंतु इससे कोई पाप उतरता नहीं है। पापात्मा कहा जाता है। साधु–संत आदि तो कह देते हैं कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा सो परमात्मा। अनेक प्रकार के मत–मतांतर हैं। जो भी घर से रूठते हैं वो जाकर आपस में कोई ना कोई मठ बना लेते हैं। अंधों पिछाड़ी बाकी भी सब जैसे कि अंधे हैं। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा ही सब कुछ जानती है। आगे ईश्वर के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। सृष्टि चक्र कैसे फिरता है यह कुछ भी नहीं जानते थे। अभी आत्मा सब कुछ जानती है। कितनी छोटी आत्मा है। पहले2 आत्मा की रियलाइजेशन करवानी होती है। आत्मा बहुत सूक्ष्म है। उनका सा. होता जैसे कि सफेद लीकरा होता है ;परंतु उससे मनुष्य कुछ भी समझ नहीं सकते। वो सब हैं भक्तिमार्ग की बातें। ज्ञान मार्ग की बातें बाप ही समझाते हैं। वो भी भृकुटी के बीच में ही आकर बैठते हैं बाजू में। यह भी झट समझ लेते हैं। यह सब हैं नई बातें जो तो बाप ही बैठकर समझाते हैं। यह पक्का याद कर लो। भूलो नहीं। बाबा को जितना याद करेंगे उतने ही विकर्म विनाश होंगे। विकर्म विनाश होने पर ही आधार तुम्हारे भविष्य के पद का। यह भी बच्चे जानते हैं कि भारत ही वो सौभाग्यशाली खंड है जहां पर बाप आते हैं। भारत ही हैविन था। जिसको ही गार्डन ऑफ फ्लावर कहते हैं। तुम अभी प्रैक्टिकल में जानते हो। तुम पढ़ते ही हो वहां जाने के लिए। सा. भी करते हो जानते हो कि बरोबर यह वो ही महाभारत लड़ाई है। फिर ऐसी लड़ाई कब लगनी नहीं है। यह है अंतिम। तुम बच्चों के लिए नई दुनियां भी जरूर चाहिए। नई दुनियां थी ना। भारत स्वर्ग था। 5000वर्ष हुआ है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं है। लाखों वर्ष अगर होते तो मनुष्य कितने अनगिणत हो जाते। यह भी कोई की बुद्धि में नहीं बैठता है कि उतने हो कैसे सकते हैं?जबकि इतनी आदमशुमारी ही नहीं है। अब तुम समझते हो कि आज से 5000वर्ष पहले विश्व पर हम राज्य करते थे और कोई खंड नहीं था। वो होते ही हैं बाद में। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सब बातें हैं। और किसी की बुद्धि में बिल्कुल ही नहीं है। थोड़ा भी इशारा दो तो समझा जावे कि बात तो बरोबर है। हमारे पहले भी जरूर कोई धर्म था। अब तुम समझा सकते हो कि एक ही आदि सनातन देवी देवता धर्म जो था वो ही प्रायःलोप हो गया है। सृष्टि पुरानी हो गई कोई भी अपने को देवता धर्म का कह नहीं सकते हैं। समझते ही नहीं कि हम